6

पर इस नई उग्र सांस्कृतिक राष्ट्रवादी पहचान और क्षात्रिय मूल्यों का नई छवि का हिस्सा होना पुरुष के नई छवि के लिए ठीक था पर स्त्री के लिए इस नई छवि से क्या उम्मीद लगाई जा सकती थी? जिस राष्ट्र पर बाहरी आक्रमण हुआ हो उसके पुरुषों में ऐसे गुण होना आवश्यक दिखाया पर स्त्री की इस नई छवि को कैसे तैयार किया जाए। क्योंकि पुरुषों को डरपोक, कमजोर शरीर वाला दिखाया गया वहीं स्त्री को पुरुष के शोषण का शिकार। अतीत के पन्नों से वेदों में स्त्री और पुरुष के समान अधिकार और कर्तव्यों को दिखाते हुए स्त्री के दर्जे को सुधारा गया। स्त्री सिर्फ घर की चारदिवारी तक सीमित ना रहे। पुरुषों का कंधे से कंधा मिलाकर भारत की आजादी में अपना योगदान दे।

स्त्री की नई छवि

* क्षत्रियाणी गुणों का पहचानना
* पुरुष को राष्ट्र हित के प्राण न्यौछावर करने और साहसी कदम उठाने के लिए प्रेरित करना व रुकावट न बनना
* डिसऑनर के बदले मौत को गले लगाना
* अतीत में आध्यात्मिक, धार्मिक सहभागिनी है से बाहरी आक्रमणों को रोकने में सहभागिता।

दयानंद

दूसरे राष्ट्रवादियों से भिन्न इन्होंने Past image identification से ज्यादा Past recreation पर जोर दिया।

* आर्य समाज की स्थापना
* महाभारत को भारतीय संस्कृति व मूल्यों में गिरावट की शुरुआत
* स्त्री के लिए मातृत्व जीने का सबसे बड़ा उद्देश्य
* बच्चे के आर्य गुण लाने के लिए मां के लिए कुछ नियम बनाए गए
* स्त्री नैतिकता का एक सुदृढ समाज बनाने के लिए प्रयोग
* स्त्री शिक्षा, स्वास्थ्य, विधवा विवाह, पर इन्हीं नियोग व्यवस्था कारणों से बल

प्र.-3 सरला देवी व रमाबाई के उदाहरण से नवनिर्मित स्त्री छवि के गुणों का आकलन

5

(4)

* स्त्रियों के स्थिती Krishna cult बनने के बाद हुई गिरी
Gो मौतिकथा | इस पर इस्लाम का प्रभाव अधिक था

इन प्राच्यवादियों के लेखकों का प्रयोग राष्ट्रवादियों ने हिन्दुओं मे उत्साह जगाने के लिए किया और साथ ही आरंभिक राष्ट्रवादियों की तरह heroic stories लिखी।

(8)

राणे — शिवाजी, मराठों पर लेख
राजस्थानेर इतिहास — राजपुत
सिख युद्धेर इतिहास — सिख
रजनी कांत गुप्ता — आर्य कीर्ति — आर्य
] वीरोंगा के बारे में कथाएँ

इस दशक के राष्ट्रवादियों मे जिन्होंने प्राच्यवादियों के वैदिक युग की स्त्री का सुनहरा युग के प्रस्तुतीकरण को सही माना उन प्राचीन छवि को उस समय की स्त्री की बदतर स्थिती को सुधारने मे प्रयोग किया। और काल और जरूरत के हिसाब से नए मूल्यों, गुणों को अपनाने की बात कही। उमा चक्रवर्ती उस दशक के राष्ट्रवादी लेखको मे से आर.सी दत्त, बंकिम, दयानंद के द्वारा स्त्री के लिए तथा पुरुष के लिए पुर्नगिठित छवि की चर्चा करती है।

राष्ट्रवादी
आर सी दत्त
* देशभक्ति की भावना जगाई। — मराठा, राजपूत वीरों की कहानियां
* नोवल लिखे जिनमे भारत के अतीत और इसके गुम होने का पश्चाताप किया।
* हिन्दुसमाज मे गिराव का कारण पंडित रहे।
* रजपुत वॉरियर → क्षत्रिय → आर्यन → बहादुर, बलिष्ठ, सैन्यबल से ओतप्रोत
* भारतीय समाज का अपने आपको उन्नत बहादुर सैनिक गुणों वाले पुर्वजों की संतान जान उन्ही गुणों को आगे बढाना।

बंकिम
* नई प्रतिछवि तैयार करना
* हिन्दु आर्यन पुरुष सैन्य बल और सन्यासी दोनों के गुणों का मिश्रण
* मिलिटैंट रेस के विकास की आवश्यकता
* अतीत का पुर्नगठन कर राष्ट्रीय एकता व गर्व को बचाना।
* कृष्णचरित्र — कृष्ण एक आइडियल के रूप मे

दर्शन मित्र

वर्ग – 2 1850 से 1880 तक का समय

(4)

प्राच्यवादी – फ्रेडरिच मैक्स मुलर
* प्राचीन वैदिक पुस्तकों में दर्ज आर्यनों की रचीवमेंटस पर ध्यान केंद्रित
* वेदों का प्रकाशन — वेद धर्मों का आधार
* आर्यन – हिन्दू जाति के असली पूवज और यहां से यूरोप और दूसरे देशों में गए
अज्ञात लोग जिनको संस्कृत जैसी लगने वाली भाषा का ज्ञान था और जो शायद यूरोप के मूल निवासी थे और वहां से आए
* यूरोपीयन और हिन्दुओं के पूर्वज एक ही, एक जैसे गुण और बहादुरी
* स्त्रीयों की स्थिति पर ज्यादा चर्चा नहीं। और वैदिक समय की स्त्री को भी पुरुष के समान दर्जा नहीं। गार्गी का उदाहरण एक exception मात्र।

मिसेज स्पीयर
* गार्गी – याजवल्क्य कथा का चित्रण
* स्त्री की बदतर स्थिति के लिए मनुस्मृति को जिम्मेदार ठहराया
* पति की आज्ञा पालन करना स्त्री का पहला, एकमात्र, आखिरी कर्तव्य- मनुस्मृति
* वैवाहिक, पतिव्रता स्त्री का चित्रण- नला – दमयंती, सावित्री- सत्यवान कथा में स्त्री के किरदार के महत्त्व को दर्शाना- स्त्री के प्यार, समर्पण जैसे गुणों की चर्चा की।
* सती धर्म भी स्त्री की पवित्रता व समपर्ण की ऊंचाईयों को छूता हुआ दिखाना। अहल्याबाई के बेटी का उदाहरण जो रोकने पर भी स्वयं की इच्छा से सती होना चाहती है।

क्लोरिस बेडर
* ईस्ट और वेस्ट के मूल्यों का कम्पारीजन, वेस्ट को ईस्ट से सिखने की जरूरत
* वेस्ट — काल्पनिक, बनावटी, भौतिक, वस्तुवादी
ईस्ट — वास्तविक, साधारण, आध्यात्मिक
* वैदिक समय में कर्म-कांड में स्त्री का अपने पति का सहयोग करना – कुशा घास इकट्ठा करना, यज्ञ कराना, हवन करना मंत्रों का उच्चारण करना – स्त्री में सहभागिता निभाना

3
दर्शन मित्र

* सिर्फ वेदों और उपनिषदों को मानक स्त्रोत के रूप में लेना वाली सब साहित्य, लेखों आचारों को नकार दिया। (3)

जहां राष्ट्रवादियों को अपने विचारों को गति देने में प्राच्यवादियों के लेखों का सहारा मिला वहीं दूसरी ओर मिशनरीज, एडमिनिस्ट्रेटर्स, ट्रैवलर्स के नकारात्मक लेखों और उनके प्रभाव को दूर करने का बीड़ा भी उठाना पड़ा।

नकारात्मक लेख - इंजीलवादी, उपनिवेशवादी लेख — मिल, ग्रांट, डफ

* स्त्रीयों पर भारतीय समाज में क्रूर व्यवहार, दासों से भी बदतर स्थिति, पुरुष वर्ग का प्रभुत्व व स्त्री वर्ग का हर प्रकार से शोषण
* मिल का कहना कि ऐसी स्थिति मोहम्मदन के आने से नहीं पर हिन्दू समाज की मौलिक विचारधारा का ही हिस्सा है
* स्त्री की इस भयानक स्थिति से बचाने के लिए सुरक्षा व इंटरवेंशन की जरूरत है। जो ब्रिटिश उपनिवेशवाद उन्हें दे सकता है
* भारतीय पुरुष नैतिक कारणों की वजह से उनकी सुरक्षा और संरक्षण प्रदान करने के काबिल नहीं
* भारतीय पुरुष अनैतिक, कायर, नाजुक शरीर वाले लोग हैं

इस तरह के नकारात्मक लेखों के जवाब में स्वदेशी लेखकों ने इतिहास के पन्नों और लोककथाओं से उन महा-पुरुषों और योद्धाओं के बारे में लिखना शुरू किया जिन्होंने अपने राज्य व प्रजा को बाहरी शक्तियों के आक्रमण से बचाया हो। इन Heroic stories को लिखने का उद्देश्य भारतीय पुरुषों और महिलाओं के खोये हुए आत्मविश्वास को जगाना था तथा ब्रिटिश राज्य के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद करने के लिए उत्साहित करना था। दूसरा मिशनरीयों के पूरे बंगाल का धर्म परिवर्तन कर देने के खतरे से बचाना और तीसरा सती प्रथा को खत्म करना भारतीय संस्कृति पर हमले की तरह देखना था। कुछ किताबें जो हिन्दुओं की बहादुरी के किस्से सामने लाने के लिखी गई —

स्वदेशी लेखक — रामराम बसु — राजा प्रतापादित्यचरित्र
मृत्युंजय विद्याअलंकार — राजावली
गोविंद चंद सेन — राजपूत as freedom lovers
Muslims as marauders
पिआरी चंद — Pre Muslim India पर फोकस
उदाहरण के लिए — महानीरवान तंत्र, कालीदास के नाटक, तमिल साहित्य से लीलावती सवियार का जिक्र

2

पर स्त्री उत्थान के लिए कई कठोर कदम उठाती नजर आती

पहले दो वर्गों में उमा चक्रवर्ती द्वारा उद्धृत प्राच्यवादियों, औपनिवेशिक उपनिवेशवादियों, स्वदेशी लेखक, राष्ट्रवादियों के विचारों को संक्षेप में ऐसे समझा जा सकता है।—

वर्ग - 1    1850 से पहले का समय

प्राच्यवादी — 1 विलियम जॉन और एच.टी. कॉलब्रुक — स्त्री का सुनहरा काल (golden age)
* एशियाटिक सोसाइटी से जुड़ाव
* संस्कृत साहित्य, इतिहास, दर्शनशास्त्र पर रिसर्च
* भारत में कास्ट, क्लास, जेंडर आधारित मौलिक रिसर्च को नजरअंदाज
* कंजरवेटिव स्वदेशी साहित्यकार, ब्राह्मण पंडितों की सीमित पर निर्भरता
* जॉन ने सती और गार्गी के संदर्भ में ज्यादा नहीं लिखा मुख्य योगदान कॉलब्रुक का
* कॉलब्रुक का रिसर्च — सती प्रथा, हिन्दू विधवा स्त्री के कर्तव्य पर चर्चा और जहां समन्वय की कमी हो वहां वेदों को आधार बना बातचीत
* सती को ऊंची नजरों से दिखाना जो अपनी इच्छा से खुशी से पति की चिता पर कूद जाती है। भारतीय पवित्र पतिव्रता स्त्री का गुण बखान किया गया।
* वहीं वेदों से मैत्रेयी - याज्ञवल्क्य, गार्गी संदर्भ को चर्चा कर इतिहास के पन्नों में स्त्री की महिमा मंडित स्थिति दिखाई।
* कॉलब्रुक का वेदों पर काम सबसे बड़ा योगदान रहा।

इनका मुख्य योगदान रहस्यमयी वैदिक गाथाओं और संस्कृत साहित्य को लोगों के सामने लाने में रहा। पर स्वदेशी लेखक भी कम सक्रिय नहीं थे। वे भी इतिहास को उस समय में स्त्री की स्थिति में बदलाव लाने के लिए उपयोग में लाना चाहते थे ~~[illegible]~~

स्वदेशी लेखक/आरंभिक राष्ट्रवादी — राजा राममोहन राय, मृत्युंजय अलंकार
* सती प्रथा को खत्म करने के लिए कदम इसके लिए उन्होंने वेदों में दिखाई स्त्री स्थिति का सहारा लिया
* गार्गी — याज्ञवल्क्य कथा के आधार पर महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले
→ स्त्रियों की आध्यात्मिक क्षमता
→ अतीत के पन्नों स्त्री को आध्यात्मिक क्षेत्र में पुरुषों के समान अधिकार
* हिन्दु स्त्री का उद्देश्य पतिव्रता, पति की सेवा नहीं पर पुरुषों की तरह ही मोक्ष पाना है और एक ब्रह्म में विलिन हो जाना है।

(5.4)

वट स्वर हैपण्ड टू वैदिक दासी — उमा चक्रवर्ती (कहानी)

(1)

उमा चक्रवर्ती अपने लेख "वट स्वर हैपनड टू वैदिक दासी" में कहती है कि हम सब अपने अंदर अतीत का बोझ लिए चलते हैं जो हमने कई सालों से पौराणिक कथाओं, आम मान्यताओं, पराक्रम की गाथाओं, लोकसाहित्य और मौखिक इतिहास द्वारा आत्मसात किया होता है। इन विचारों के मिश्रण की, जो अपनी फितरत में पितृसत्तात्मक होते हैं, हमारी सामूहिक चेतना पर मजबूत पकड़ होती है और ये ही अतीत में महिलाओं की हैसियत को लेकर हमारी समझ का आधार बनते हैं। ऐसी अभिरुचियाँ लगातार सामने लाई जाती हैं और नए सिरे से गठित-पुनर्गठित होती रहती हैं। ~~भारतीय परिवार में, [illegible]~~

~~यह वे तत्व जो किसी समूह की अतीत की समझ बनाते हैं हमेशा समान नहीं रहते बल्कि बदलते रहते हैं।~~ ऐसा ही समय भारत की संदर्भ में 19वीं शताब्दी में आया। नई ~~[illegible]~~ प्रति-छवि ~~[illegible]~~ मध्य वर्गीय व्यक्ति को वर्तमान के बोझ से हल्का करने में मदद की जो आत्मसम्मान, आत्म-विश्वास उन्होंने खो दिया था वह हिन्दु-आर्यन आइडेंटिटी निर्माण से वापस पाने में मदद मिली। उपनिवेशवाद व राष्ट्रवाद के मध्य संवाद से जो अतीत की समझ मध्य वर्ग ने विकसित की वह चेतना की गहराई तक दौड़ा ली। स्त्री के संदर्भ में यह पुनर्गठन 'lost glory' (खोयी हुई महिमा) के रूप में सामने आया।

उमा अपने लेख में अतीत के पुनर्गठन प्रक्रिया को तीन विभागों में बांटकर वर्णन करती है। वह पहले भाग में 1850 तक का समय, दूसरे भाग में 1850–80 का समय लेती है। इन दोनों वर्गों में वह प्राच्यवादियों, इंगलिस्टस, राष्ट्रवादियों के लेखों और कार्यों की चर्चा करती है। इन दोनों वर्गों में वह वह दिखाने की कोशिश करती है कि 19वीं शताब्दी में स्त्री की क्या नई छवि निर्मित कि गई जो वैदिक समय में उसकी छवि के अनुरूप बनाई गई। वर्ग तीन में वह इस नई छवि और वास्तविक अनुभवों के बीच संबंध खंगालने की कोशिश करती है। इसमें वह 19वीं शताब्दी की समकालिन नारी समाज उद्धारक रामबाई और सरला देवी का उदाहरण लेती है। जहाँ सरला देवी ~~[illegible]~~ स्त्री के लिए अतीत के आधार पर निर्मित नई छवि के अनुरूप तो दिखाई देती है पर नारीवादी आंदोलन से दूर नज़र आती है। वहीं रामबाई जो इस नई छवि पर तो खरी नहीं उतरती